प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन सप्ताह का हुआ समापन

पंतनगर। 22 अगस्त, 2020। पंतनगर विश्वविद्यालय में चल रही खरपतवार प्रबंधन पर अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना के अन्तर्गत आयोजित गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन सप्ताह कार्यक्रम का समापन आज कृषि महाविद्यालय के सभागार में हुआ। इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि, डा. एस.के. कश्यप के साथ निदेशक शोध, डा. ए.एस. नैन, विभागाध्यक्ष, सस्य विज्ञान, डा. के.एस. शेखर एवं परियोजना समन्वयक, डा. वी.पी. सिंह मंचासीन थे।

अधिष्ठाता, कृषि, डा. एस.के. कश्यप ने गाजर घास के प्रकोप को देखते हुए इसके उन्मूलन हेतु चलाये गये कार्यक्रम की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस जागरूकता अभियान में राज्य सरकार एवं मीडिया को साथ में जोड़ने से यह अभियान और अधिक प्रभावशाली होगा। निदेशक शोध, डा. ए.एस. नैन ने गाजर घास को अन्य विकल्प के रूप में जैसे कम्पोस्ट बनाना, हरी खाद बनाने के साथ-साथ शाकनाशी, कीटनाशी एवं औषधीय के रूप में उपयोग करने पर बल दिया। उन्होंने आह्वान कि यह अभियान वर्ष भर चलाया जाये और इसमें विद्यार्थी को भी जोड़ा जाये। विभागाध्यक्ष सस्य विज्ञान, डा. के.एस. शेखर ने गाजर घास उन्मूलन कार्यक्रम की प्रशंसा की। इससे पूर्व वरिष्ठ खरपतवार वैज्ञानिक, डा. तेज प्रताप ने सप्ताह भर में हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी।

साथ ही पूर्वाहन में इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के प्रजनक बीज अनुसंधान केन्द्र में जागरूकता अभियान चलाया गया। प्राध्यापक, सस्य विज्ञान एवं परियोजनाधिकारी, डा. वी.पी. सिंह ने जन समुदाय से गाजर घास के उन्मूलन के लिए आह्वाहन किया। उन्होंने सभी को अपने आस-पास के लोगों को भी गाजर घास के प्रति जागरूक करने की बात कही, ताकि गाजर घास का सम्पूर्ण उन्मूलन हो सके। वरिष्ठ शोध अधिकारी, सस्य विज्ञान, डा. एस.पी. सिंह ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए वहां उपस्थित वैज्ञानिकों, श्रमिकों, कर्मचारियों एवं परियोजना में कार्यरत कार्मिकों को जागरूकता अभियान का परिचय देते हुए कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उन्होंनें चलचित्र के माध्यम से गाजर घास से होने वाले नुकसान एवं उपयोग के बारे में जानकारी प्रदान की। वरिष्ठ शोध अधिकारी, डा. तेज प्रताप ने श्रमिकों को गाजर घास की पहचान कराते हुए गाजर घास से मनुष्यों ,पशुओं एवं वातावरण पर होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया जो इसमें उपस्थित रसायन 'पार्थेनिन' के कारण होता है। डा. प्रताप ने गाजर घास के प्रबंधन की विधियाँ बतायीं तथा गेंदे के पौधे, चकवड़ एवं लटजीरा के पौधों की पहचान कराते हुए इनके एलीलोपेथिक प्रभाव द्वारा गाजर घास को समाप्त करने की विधि के बारे में जानकारी दी।

बीज उत्पादन केन्द्र के संयुक्त निदेशक, डा. पी.एस. शुक्ला, ने इस कार्यक्रम से प्राप्त जानकारी को महत्वपूर्ण बताया और धन्यवाद ज्ञापित किया तथा अधिक से अधिक लोगों को गाजर घास के प्रति जागरूक करने एवं उन्हें प्रेरित करने के लिए कहा। इस कार्यक्रम के दौरान गाजर घास से होने वाले नुकसान एवं उपयोगिता पर एक चलचित्र भी दिखाया गया तथा उपस्थित जनों को मास्क एवं दस्ताने वितरित किये गये और गाजर घास के उन्मूलन का संकल्प भी लिया गया। कार्यक्रम में लगभग 70 लोगों ने भाग लिया।

जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए बीज अनुंसधान केन्द्र, पंतनगर, के सयुक्त निदेशक, सह निदेशक एवं श्रमिकों ने अपना सहयोग प्रदान किया साथ ही खरपतवार परियोजना के पी.डी.एफ., एस. आर. एफ., प्रोजेक्ट असिस्टेन्ट एवं श्री हंसराज यादव ने सहभागिता की।

गाजर घास जागरूकता एवं उन्मूलन सप्ताह के समापन के अवसर पर मंचासीन अधिष्ठाता कृषि एवं वैज्ञानिक।